प्रेसिडेंसी कॉलेज, कोलकाता

हिन्दी विभाग

प्रवेश परीक्षा- 2007

अवधि- 2 घंटे

अंक - 100

1. निम्न विषय पर निबंध लिखिए - (50)

इन्टरनेट के युग में साहित्य

2. निम्नलिखित कविता के संबंध में यथानिर्देश उत्तर लिखिए -

कितने ही जंगल साफ करते जाओ
और रास्ता बनाते जाओ
मील के पत्थरों की जगह
लगाते जाओ दलों की टोपियां
पर कोई रास्ता कहीं नहीं ले जाता
वापस लौट आता है उन्हीं तहखानों में
जहाँ हर एक के अपने अपने चरखों का अम्बार है,
चारों ओर लगी हुई दीमकों की कतार है
सीलन हैं , चूहे हैं, जाले हैं———

(क) इस कविता का मूल भाव स्पष्ट करें । (15)

(ख)' कितने ही जंगल साफ करते जाओ और रास्ता बनाते जाओ ' से कवि का क्या तात्पर्य है ? (15)

(ग) कवि ने मील के पत्थरों की जगह दल की टोपियों की बात क्यों कही है ? (10)

3.निम्नांकित गद्यांश की भाषिक संरचना को शुद्ध रूप से लिखिए - (10)

समकालिन हिन्दी कविता में मुक्तीबोध की उपसिथति निरंतर व्याखया विशलेषण की मॉंग करती रही है। उनकी रचना का काल-वृत्त अनेक राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय घटनाओं और उतार- चढ़ावों से युक्त है। कवी की कविता में जिस जिवनानुभाव से हम साक्षातकार करते हैं, वह वेदनामय जटिल और संघषर्मय है।